आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 22-10-14

पवित्रता के सागर, पतित-पावन, विश्व में पवित्र दुनिया के रचयिता, परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - पवित्रता के आधार से ही तुम्हें स्वर्ग में पीस और प्रासपर्टी मिलती हैं. पवित्रता ही मुख्य धारणा हैं. पवित्रता के कारण ही इन देवी-देवताओं की पूजा होती हैं.

परमात्मा शिव द्वारा स्थापित इस बेहद के ज्ञान-रुद्र-यज्ञ का मुख्य कारण, इस विश्व की सर्व जीवात्माओं और प्रकृति के पांच तत्वों को संपूर्ण पावन बनाकर इस विश्व पर संपूर्ण पवित्र-पावन दुनिया सतयुग की स्थापना करना हैं. इस लिए हमारे यह ब्राह्मण जीवन में पवित्रता धारण करना सबसे मुख्य हैं.

किसे संपूर्ण पवित्र आत्मा कहा जाता हैं?

संपूर्ण पवित्रता यानी जीवन में मात्र ब्रह्मचर्य को पालन करना ही नहीं हैं.

संपूर्ण पवित्र आत्मा यानी

- जिसकी वृति संपूर्ण पावन हो. वृति में रिंचक मात्र भी काम-विकार न हो.
- पावन वृति से अपनी दृष्टि को शुद्ध किया हो.
- स्वप्न में भी अपवित्रता न हो.
- सम्बन्ध-समपर्क में आने वाली सर्व आत्माओं के प्रति भाई-भाई की वृति-दृष्टि हो.
- व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो.
- स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट हो.
- अपने मन-वचन-कर्म से किसी को दुख न देती हो.

संपूर्ण पवित्रता धारण करने की विधि -

- स्वयं को आत्मा समझ परमपिता-परमात्मा शिवबाबा से ज्वालामुखी योग कर, अपवित्रता के संस्कारों को आत्मा में से जला कर भस्म करना हैं.
- ज्ञान का उपयोग कर अपनी वृति को पावन करना हैं. सर्व आत्माओं के तरफ मेरी वृति अंदर से भाई-भाई की रखने की प्रैक्टिस करनी हैं.
- आत्मा में से भय को निकाल, स्व से और परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहना ही हैं.
- व्यर्थ से मुक्त रहने के लिए, फालतू बातों को न सुनना हैं, न बोलना हैं और न देखना हैं.

- नींद में स्वप्न से मुक्त रहने के लिए, बाबा से दस मिनिट योग कर, बाबा की गोदी में सो जाना हैं.
- मन-वचन-कर्म से किसको भी दुख नहीं देना हैं और किसी से दुख नहीं लेना हैं.

संपूर्ण पवित्रता कि स्वयं में चैकिंग ---

- पवित्रता को चेक करने के लिए अपनी वृति को चेक करना हैं. अगर मेरी वृति स्वच्छ हैं तो मेरी आंखें किसी पर ठहरेगी नहीं, आंखें धोखा नहीं देगी. चेक करें की मन-वचन-कर्म से सम्बन्ध-समपर्क में आने वाली सर्व आत्माओं प्रति हमारी वृति भाई-भाई की रहती हैं.
- बाबा ने कहा हैं की व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता हैं. तो हमें ये स्वयं में चेक करना हैं की कहा तक व्यर्थ संकल्पों पर हमारा क़ाबू हैं.
- स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहने वाली आत्मा ही संपूर्ण पवित्र बन सकती हैं. तो स्वयं में चेक करें मैं कितना ऑनेस्ट हूँ.
- इस समय प्रकृति के पांचों तत्व संपूर्ण तमोप्रधान हैं इसलिए जभी मैं पानी पीता हूँ या खाना खाता हूँ, तब बाबा की याद में रह पवित्रता की दृष्टि देकर खाता हूँ.
- स्वप्न में भी अपवित्रता न आये इसलिए सोने से पहले दस मिनिट बाबा को याद कर बाद में सोता हूँ
- चेक करो, मैं किसी भी अन्य आत्मा को अपने मन-वचन-कर्म से दुख तो नहीं देती हूँ.

बाबा ने बताया हैं की पवित्रता ही सुख-शांति की जननी हैं. देवी-देवता ये सब सुखी हैं इसका कारण वह संपूर्ण पवित्र हैं. याद रहे की पवित्रता मेरी पूंजी हैं, जैसे मेरे बचत खाते में रखी हुई पूंजी को मैं संभाल कर रखता हूँ, वैसे ही मुझे अपनी पवित्रता की संभाल करनी हैं.

प्रतिज्ञा --- कुछ भी हो जाये, चाहे अपने मन की स्थिति द्वारा, चाहे अन्य कोई आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायु-मण्डल द्वारा कुछ भी हो जाये, मुझे पवित्रता की धारणा को पूरा पालन करना ही हैं.

ॐ शांति.

Please send your experience/feedback to Atma bhai on email –
a.brahmin.soul@gmail.com .